41

हिंदी साहित्य में भारतीय ज्ञान परंपरा का स्वरूप और मूल्य-चेतना

Dr. Girish Banjara
Assistant Professor
Vivekanand College of Arts Ahmedabad, Gujarat

सारांश :

यह लेख हिन्दी साहित्य में भारतीय ज्ञान परंपरा के स्वरूप और उसकी मूल्य-चेतना का समग्र विवेचन प्रस्तुत करता है। भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की प्राचीनतम एवं समृद्ध परंपराओं में से एक है, जिसका केंद्र सत्य, धर्म, अहिंसा, करुणा, समत्व, सह-अस्तित्व और मानव-कल्याण रहा है। हिन्दी साहित्य इस परंपरा का स्वाभाविक विस्तार है और आदिकाल से आधुनिक काल तक उसने भारतीय जीवन-दृष्टि, सांस्कृतिक चेतना और नैतिक मूल्यों को साहित्यिक रूप प्रदान किया है। लेख में स्पष्ट किया गया है कि वेद-उपनिषद, भारतीय दर्शन, रामायण-महाभारत, लोक-परंपरा और संत-चिंतन—इन सभी स्रोतों ने मिलकर भारतीय ज्ञान परंपरा को आकार दिया, जिसका प्रभाव हिन्दी साहित्य के प्रत्येक युग में दिखाई देता है। आदिकाल में वीरता और कर्तव्य, भक्तिकाल में भक्ति, अद्वैत, प्रेम और मानव-मुक्ति, रीतिकाल में सौन्दर्य और सांस्कृतिक मर्यादा तथा आधुनिक काल में सामाजिक न्याय, मानवता, संघर्ष और विवेक के रूप में यह परंपरा विकसित हुई। हिन्दी साहित्य में भारतीय ज्ञान परंपरा आध्यात्मिक चेतना, नैतिकता, ज्ञान-विवेक, समरसता, सह-अस्तित्व और सौन्दर्य-बोध के रूप में अभिव्यक्त होती है। सत्य, अहिंसा, प्रेम, सामाजिक समानता, कर्तव्य-बोध और श्रम जैसे मूल्य साहित्य को गहराई और प्रासंगिकता प्रदान करते हैं। आधुनिक साहित्यकारों ने इन मूल्यों की पुनर्व्याख्या कर उन्हें समकालीन संदर्भों से जोड़ा है।

अंततः लेख यह निष्कर्ष प्रस्तुत करता है कि हिन्दी साहित्य भारतीय ज्ञान परंपरा की जीवंत धरोहर है। यह परंपरा केवल अतीत की स्मृति नहीं, बल्कि आज भी समाज को मूल्य-समृद्ध, नैतिक, संवेदनशील और संतुलित बनाने की प्रेरणा देती है।

मुख्य शब्द : भारतीय ज्ञान परंपरा, हिन्दी साहित्य, मूल्य-चेतना, भारतीय दर्शन, वेद एवं उपनिषद, भक्ति आंदोलन, सामाजिक चेतना

प्रस्तावना :

भारतीय ज्ञान परंपरा विश्व की सबसे प्राचीन और सर्वाधिक समृद्ध परंपराओं में से एक है। इसमें जीवन, ब्रह्मांड, मनुष्य, प्रकृति, समाज और मूल्यों के विविध आयामों को अत्यंत सूक्ष्मता से समझा गया है। भारतीय चिंतन सदैव 'सत्य', 'धर्म', 'अहिंसा', 'करुणा', 'समत्व', 'सह-अस्तित्व' और 'मंगल' जैसे आदर्शों को केंद्र में रखकर विकसित हुआ। भारतीय ज्ञान परंपरा का मूल उद्देश्य मनुष्य के भीतर निहित चेतना का विकास, आत्मा और परमात्मा का मिलन, तथा समाज में नैतिकता, समरसता और कल्याण का प्रसार है। हिन्दी साहित्य, जो भारतीय सांस्कृतिक धरोहर का सीधा विस्तार है, स्वाभाविक रूप से इस ज्ञान परंपरा और उसके मूल्य-चिंतन को अपने भीतर धारण करता है। आदिकाल के मौखिक आख्यानों से लेकर आधुनिक साहित्य की जटिल अभिव्यक्तियों तक, हर युग में हिन्दी साहित्य ने भारतीय ज्ञान परंपरा की आत्मा को नए रूप में प्रस्तुत किया है। इसीलिए हिन्दी साहित्य को केवल काव्य-भाषा या कलात्मक रचना

का माध्यम मानना पर्याप्त नहीं; यह भारत की जीवन-दृष्टि, सांस्कृतिक चेतना और नैतिक मूल्यों का संवाहक भी है। यह लेख इसी दृष्टि से हिन्दी साहित्य में भारतीय ज्ञान परंपरा के स्वरूप, उसके मूल्यों, उसके साहित्यिक रूपान्तरण तथा आधुनिक समय में उसके महत्व का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत करता है। भारतीय ज्ञान परंपरा अत्यंत विस्तृत और बहुस्तरीय है। इसका आधार केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं बल्कि दर्शन, साहित्य, कला, विज्ञान और समाज-व्यवस्था के विविध स्रोत हैं। इसके कुछ प्रमुख आधार-स्तम्भ निम्न हैं—

(क) वेद एवं उपनिषद: वेदों में 'ऋतम्', 'सत्य', 'धर्म' और 'यज्ञ' को जीवन की आधारशिला माना गया। उपनिषदों में आत्मा-ब्रह्म की अद्वैत सत्ता, चिदानंद, आध्यात्मिक ज्ञान और मानव-एकता को प्रमुखता मिली।

हिन्दी साहित्य में यह दृष्टि कबीर, तुलसी, मीरा, निर्गुण-संतों तथा आधुनिक कवियों तक में गहराई से दिखाई देती है।

(ख) भारतीय दर्शन–सांख्य, योग, वेदान्त, जैन, बौद्ध: इन सभी ने ज्ञान, कर्म, भक्ति, ध्यान, अहिंसा, मध्यम मार्ग, अनित्यता, दया, त्याग आदि मूल्यों को प्रतिष्ठित किया।

रामचरितमानस, गीतावली, विनय-पत्रिका, साखी–सब इन मूल्यों से ओतप्रोत हैं।

(ग) पुराण, महाभारत और रामायण: इन ग्रंथों में धर्म-अधर्म, नैतिक निर्णय, संघर्ष, आदर्श, नीति और जीवन-संग्राम का विस्तृत चित्रण मिलता है। हिन्दी साहित्य विशेषकर रीतिकाल और भक्तिकाल इन आख्यानों से अत्यधिक प्रभावित है।

(घ) लोक-परंपरा और लोक-ज्ञान : लोकगीत, लोककथाएँ, मुहावरे, कहावतें—ये सब भारतीय जीवन, नैतिकता और अनुभवजन्य ज्ञान के भण्डार हैं। हिन्दी साहित्य का बड़ा हिस्सा इसी लोक-स्मृति का परिष्कृत रूप है।

(ङ) मध्यकालीन संत-चिंतन : संतमत ने जाति-विरोध, अद्वैत प्रेम, काया-जप, सह-अस्तित्व, आध्यात्मिकता और सामाजिक समानता का संदेश दिया।

हिन्दी साहित्य में यह एक क्रांतिकारी बौद्धिक धारा बनकर उभरा।

इन सभी स्रोतों ने मिलकर भारतीय ज्ञान परंपरा को 'सर्वांगीण मानवतावाद' का रूप दिया, जिसमें मनुष्य और समाज दोनों को समग्रता में विकसित करने की दृष्टि है।

*** हिन्दी साहित्य : भारतीय ज्ञान परंपरा का स्वाभाविक रूपान्तरण :**

हिन्दी साहित्य केवल सौन्दर्य-बोध की अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि भारतीय जीवन-दर्शन का साहित्यिक रूप है। प्रत्येक युग में हिन्दी साहित्य ने भारतीय ज्ञान परंपरा को नए रूप में मूर्त किया।

(क) आदिकाल : वीरगाथा और जीवन-मूल्य: चाहे चंदबरदाई की 'प्रथम विजय गीत' हों या जयंसी के 'पृथ्वीराज रासो', आदिकाल में पराक्रम ,सत्य,निष्ठा,देश-भक्ति,त्याग जैसे मूल्यों को केंद्र में रखा गया—जो भारतीय ज्ञान परंपरा की धर्म-रक्षक विरासत का परिणाम है।

(ख) भक्तिकाल : भक्तिकाल को भारतीय ज्ञान परंपरा का स्वर्ण-युग कहा जा सकता है। इस युग में—अद्वैतवाद (कबीर) विश्व-प्रेम (मीरा) कर्तव्य और मर्यादा (तुलसी) भक्ति के बहुविध स्वरूप(सूर) सहजयोग और निर्गुण ब्रह्म बड़े साहित्यिक रूप में सामने आए। भक्तिकाल ने यह सिद्ध किया कि ज्ञान का लक्ष्य मोक्ष ही नहीं, बल्कि मानव-मुक्ति भी है।

(ग) रीतिकाल :रीतिकाल को सामान्यतः श्रृंगार तक सीमित माना जाता है, परन्तु यह आधा सत्य है। रीतिकाल में—राम-भक्ति,कृष्ण-भक्ति,धर्म-नैतिकता,लोक-संस्कार,मानवीय संबंधों की मर्यादा जैसे मूल्यों की सांस्कृतिक अभिव्यक्ति गहराई से मौजूद है।

(घ) आधुनिक हिन्दी साहित्य : भारत के स्वतंत्रता-संग्राम ने हिन्दी लेखकों को भारतीय ज्ञान परंपरा के सामाजिक-राजनीतिक स्वरूप की ओर प्रेरित किया। दिनकर, मैथिलीशरण गुप्त, निराला, रामधारी सिंह दिनकर, प्रेमचन्द, अज्ञेय–सबने भारतीय मूल्यों का आधुनिक परिप्रेक्ष्य में पुनर्रचना किया। आदर्शवाद, संघर्ष, मानव-एकता, अतिक्रमण से मुक्ति, सत्याग्रह, श्रम और समानता—ये सभी भारतीय ज्ञान परंपरा की आधुनिक अभिव्यक्तियाँ हैं।

*** भारतीय ज्ञान परंपरा का स्वरूप : हिन्दी साहित्य के संदर्भ में :**

भारतीय ज्ञान परंपरा का स्वरूप बहुआयामी है। हिन्दी साहित्य इसे निम्न रूपों में रूपान्तरित करता है—

(1)आध्यात्मिक चेतना: भारतीय ज्ञान परंपरा की जड़ में आध्यात्मिकता है—जो आत्मा को केंद्र में रखती है। यह चेतना हिन्दी साहित्य में—कबीर की 'काया में ब्रह्म' की अनुभूति,सूर की ब्रज-ब्रह्मानुभूति,मीरा के 'अनन्य-प्रेम का योग',तुलसी की 'राम में अद्वैत-सगुण मिलन' के रूप में विद्यमान है।

(2) नैतिकता और धर्म: 'धर्म' का अर्थ नियम, नैतिकता, आचार, कर्तव्य और सत्य है—केवल पूजा नहीं। हिन्दी साहित्य में यह धर्म-चेतना इस प्रकार व्यक्त होती है—रामचरितमानस के 'मर्यादा पुरुषोत्तम' का आदर्श,प्रेमचन्द के पात्रों की नैतिक दृढ़ता,गांधी और निराला के साहित्य में सत्य और अहिंसा का घोष ।

(3) ज्ञान और विवेक : भारतीय परंपरा में 'ज्ञान' केवल बौद्धिक नहीं बल्कि अनुभूति-प्रधान है। हिन्दी साहित्य में विवेक—कबीर की साखियों में,बुद्ध के अनित्यता-चिंतन में,रैदास की निरअहंता में,आधुनिक कवियों की तार्किकता में जीवंत है।

(4) सह-अस्तित्व और समरसता : भारतीय ज्ञान परंपरा 'वसुधैव कुटुम्बकम्' और 'एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति' की घोषणा करती है। यह परंपरा हिन्दी साहित्य में—संत कवियों की समता,प्रेमचन्द की सामाजिक समरसता,हरिवंश राय बच्चन की मानव-एकता,नागार्जुन और त्रिलोचन का श्रमिक-जगत के माध्यम से जीवित है।

(5) सौन्दर्य-बोध और रस-दृष्टि : भारतीय ज्ञान परंपरा में 'रस' को ज्ञान का एक रूप माना गया। रीतिकाल, छायावाद और आधुनिक हिन्दी कविता में—श्रृंगार ,करुण ,वीर,शान्त जैसे रस भारतीय सौन्दर्य के मूल्य को प्रत्यक्ष रूप से दर्शाते हैं।

*** हिन्दी साहित्य में भारतीय मूल्य-चेतना :**

भारतीय मूल्य-चेतना का विस्तार अत्यंत व्यापक है। हिन्दी साहित्य में इन मूल्यों का विकास निम्न प्रकार से मिलता है—

(1) सत्य का मूल्य : कबीर, तुलसी, प्रेमचन्द, गांधीवादी कवियों तथा नवीन साहित्य में सत्य सर्वोच्च मूल्य के रूप में उपस्थित है।

कबीर कहते हैं—

"साँच कहै तो मारन धावै, झूठे जग पतीजै।"

(2) अहिंसा और करुणा : भारत की बौद्ध-जैन परंपरा का केन्द्रबिंदु अहिंसा है। मीरा, रैदास और आधुनिक साहित्य में यह मूल्य गहराई से प्रकट होता है। प्रेमचन्द के 'गोदान' में होरी की करुणा इसका अद्भुत उदाहरण है।

(3) प्रेम और भक्ति : हिन्दी साहित्य में प्रेम केवल भावुकता नहीं, बल्कि आध्यात्मिक एकता का माध्यम है। चाहे मीरा का कृष्ण-प्रेम हो, सूर की वात्सल्य-भक्ति हो, या गुप्त और प्रसाद का मानव-प्रेम—सब भारतीय मूल्य हैं।

(4) सामाजिक समानता : भारतीय ज्ञान परंपरा में जाति-विरोध और समानता का आधार उपनिषदों और संतों में मिलता है। हिन्दी साहित्य में— कबीर का 'जाति न पुछो साधु की',रैदास का 'बेगमपुरा',प्रेमचन्द का 'सामाजिक न्याय',अज्ञेय और मुक्तिबोध का 'समानता-चेतना' इसकी व्यापक अभिव्यक्ति है।

(5) कर्तव्य-बोध और मर्यादा : तुलसीदास का साहित्य भारतीय कर्तव्य-निष्ठा का सर्वोत्तम उदाहरण है। रामचरितमानस में जो धर्म-व्यवस्था है, वह भारतीय समाज की नैतिक रचना का आधार बनती है।

(6) श्रम और जीवन-संघर्ष का मूल्य : भारत की ज्ञान परंपरा में श्रम को पूजा माना गया है—

यह मूल्य मुक्तिबोध, नागार्जुन, केदारनाथ अग्रवाल, राजकमल चौधरी, त्रिलोचन और प्रेमचन्द की रचनाओं में मिलता है।

*** आधुनिक हिन्दी साहित्य में भारतीय ज्ञान परंपरा की पुनर्व्याख्या :**

आधुनिक साहित्य केवल परंपराओं की पुनरावृत्ति नहीं करता बल्कि उन्हें नए रूप में व्याख्यायित करता है। प्रेमचन्द के साहित्य में – नैतिकता और सामाजिक न्याय, महादेवी वर्मा – करुणा और आध्यात्मिक सौन्दर्य, दिनकर – राष्ट्र, धर्म और वीरता, अज्ञेय और मुक्तिबोध – अस्तित्व और विवेक अज्ञेय आध्यात्मिकता को आंतरिक स्वतंत्रता में बदलते हैं, जबकि मुक्तिबोध भारतीय विवेक को वर्ग-संघर्ष के संदर्भ में पुनर्स्थापित करते हैं।

उपसंहार: हिन्दी साहित्य भारतीय ज्ञान परंपरा की जीवित धरोहर है। इसका स्वरूप सदियों में विकसित हुआ है, लेकिन इसकी मूल आत्मा सत्य,प्रेम,करुणा,नैतिकता,सह-अस्तित्व,भक्ति,सौन्दर्य,समभाव,आज भी उतनी ही सशक्त और प्रासंगिक है। भारतीय ज्ञान परंपरा और हिन्दी साहित्य का यह संबंध केवल ऐतिहासिक या सांस्कृतिक नहीं, बल्कि जीवंत और निरंतर प्रवहमान है। इन दोनों का समन्वय भारतीय समाज को मूल्य-समृद्ध, संवेदनशील, नैतिक और संतुलित बनाने का आधार प्रदान करता है।